घनानंद के सवैया

अति सूधो सनेह को मारग है, जहां नेकु सयानप बांक नहीं।

तहां सांचे चलैं तजि आपुनपौ, झिझकैं कपटी जे निसांक नहीं॥

घन आनंद प्यारे सुजान सुनौ, यहां एक ते दूसरो आंक नहीं।

तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ लला, मन लेहु पै देहु छटांक नहीं॥

अर्थात्: घनानंद यहां 'ये रास्ते हैं प्यार के' वाले मूड में हैं और कह रहे हैं कि प्यार के रास्ते पर जरा भी सयानापन और चालाकी नहीं चलती है, क्योंकि यहां तो सच्चाई के साथ ही आगे बढ़ा जा सकता है. ईगो को यहां छोड़ना पड़ता है. छल-कपट रखने वालों को इस रास्ते पर चलने में झिझक होती है.

यहां घनानंद विरक्त होकर भी सुजान को भूल नहीं पाते और उसका नाम लेकर कृष्ण को संबोधित करते हैं कि एक के सिवा प्यार में कोई दूसरा नहीं होता.

लेकिन हे कृष्ण! तुम कौन से स्कूल से पढ़ कर आए हो कि मन (दिल) भर लेते हो और देते छटांक भर (थोड़ा-सा प्यार) भी नहीं हो.

रावरे रूप की रीति अनूप, नयो-नयो लागै ज्यों-ज्यों निहारियै।

त्यों इन आंखिन बानि अनोखी अधानि कहूँ नहिं आन तिहारिये।

कवि कहते हैं- प्रिय के सुन्दर रूप से प्रियतम को कभी भी तृप्ति नहीं मिलती है। वह जीतनी बार भी उसे देखता है उतनी बार उसे नई लगती है। जब से सुजान को घनानंद ने देखा है तब से उनकी आँखें किसी और को देखना ही नहीं चाहती है। उनके आँखों में सिर्फ सुजान ही बसी थी। घनानंद की कविता में सुजान की परम प्रेम की व्यख्या है। घनानंद स्वयं प्रेमी थे। उनका सुजान से गहरा और एक तरफा प्रेम था।

अति सूधो सनेह को मारण है, जहाँ नेकु सयानप बांक नहीं।

तहाँ सांचे चलै तजि आपनयौ झझकै कपटी जे निसांक नहीं।।

घनानंद की कविता का प्राण उनकी प्रेम की विरहानुभूति थी। घनानंद की कविता में प्रेम के पीर की अनेक रूप विधमान हैं। घनानंद के जीवन में प्रेम का स्थान बहुत ही ऊँचा था। उनका सम्पूर्ण जीवन काव्य प्रेम रुपी रस से ओत-प्रोत था। इनका प्रेम सामान्य नहीं उदात्त था। इन्होंने सुजान के पेशे से नहीं, सुजान से प्रेम किया था। घनानंद ने सुजान से नकारात्मक प्रतिक्रिया पाकर भी प्रेम करना नहीं छोड़ा बल्कि उन्होंने सुजान के प्रेम को अपनी रचनाओं में पिरोकर उसे और भी अमर बना दिया। प्रेम के मार्ग में इन्हें जो दु:ख और पीड़ा मिली उससे वे निराश नहीं हुए बल्कि और भी उत्साह से प्रेम के पथ पर आगे बढ़ते चले गए। घनानंद ने अपने प्रेम को आध्यात्मिकता की पराकाष्ठा तक पंहुचा दिया। घनानंद ने जिस तरह प्रेम रूपी सागर में डूबकर सुजान से प्रेम किया उसी तरह आध्यात्म रूपी सागर में डूब कर भगवान श्री कृष्ण से भक्ति किया। घनानंद ने प्रेम और भक्ति के बीच की रेखाओं को मिटा दिया। इनका लौकिक प्रेम कब अध्यात्मिक प्रेम में बदल गया यह उन्हें भी नहीं पता चला। घनानंद को प्रेम में पीड़ा मिलती है लेकिन उस पीड़ा में ही वे आनंद का अनुभव करते हैं। प्रेम को ये साधना का दर्जा देते हैं तथा प्रेम के दोनों ही पक्षों (संयोग और वियोग) को सम्पूर्णता से अनुभव करते हैं। वे 'संयोग' का अनुभव जिस तन्मयता के साथ करते हैं, 'वियोग' का भी अनुभव उसी तन्मयता के साथ करते हैं। घनानंद के प्रेम में पलायन का भाव कहीं भी नहीं मिलता है और न ही निराशा दिखाई देती है। प्रेम में विरह से पलायन के लिए मृत्यु का वरन करना तो इनकी दृष्टि में कायरता थी। इसीलिए घनानंद ने प्रेम के दो परम्परागत आदर्श के प्रतीक माने जाने वाले 'मछली' और 'पतंग' की भर्त्सना (फटकार) की है-